भारतीय विद्यालय अल वादी अल कबीर

शीतावकाश गृहकार्य (2015-2016)

कक्षा - दसवीं विषय - हिंदी

प्रश्न - विग्रह करके समास का नाम लिखिए -

1 चंद्रमौलि ---------- ----------

2 अमृतधारा ---------- ----------

3 गुरुदक्षिणा ---------- ----------

4 दाल-रोटी ---------- ----------

5 पीतांबर ---------- ----------

6 विद्याधन ---------- ----------

7 पराधीन ---------- ----------

8 कालीमिर्च ---------- ----------

9 जेबकतरा ---------- ----------

10 देशनिकाला ---------- ----------

11 दुरुपयोग ---------- ----------

12 कांतिहीन ---------- ----------

13 आमरण ---------- ----------

14 शिवार्पण ---------- ----------

15 यथाविधि ---------- ----------

16 बेलगाम ---------- ----------

17 नवरत्न ---------- ----------

18 यथामति ---------- ----------

19 श्वेताम्बर ---------- ----------

20 कलानिपुण ---------- ----------

21 प्रधानाध्यापक ---------- ----------

22 रसोईघर ---------- ----------

23 कमलनयन ---------- ----------

24 अधपका ---------- ----------

25 अकालपीड़ित ---------- ----------

26 त्रिभुज ---------- ----------

27 हस्तलिखित ---------- ----------

28 मनगढ़ंत ---------- ----------

29 शरणागत ---------- ----------

30 कनकलता ---------- ----------

31 वनवास ---------- ----------

32 चरणकमल ---------- ----------

33 हवनसामग्री ---------- ----------

34 सज्जन ---------- ----------

35 गंगाजल ---------- ----------

36 क्रांतिकारी ---------- ----------

37 सपरिवार ---------- ----------

38 विश्वविख्यात ---------- ----------

39 श्रमसाध्य ---------- ----------

40 दुर्भाग्य ---------- ----------

प्रश्न - निम्नलिखित काव्यांश को पढ़कर दिए गए प्रश्नों के उत्तर दीजिए :

मुक्ति विभीषण और मुक्ति रावण को देकर,
विजय सखी के संग शुद्ध सीता को लेकर --
दाक्षिणात्य-लंकेश अतिथि लाकर मन भाए,
आतिथेय ही बने लक्ष्मणाग्रज घर आए ।
भरत और शत्रुघ्न नगर तोरण के आगे,
मानो थे प्रतिबिंब प्रथम हो उनके जागे ।
कहा विभीषण सुकंठ से सुध-सी खोकर --
"प्रकटित सानुज राम आज दुगुने-से होकर !"
वर विमान से कूद, गरुड़ से ज्यों पुरुषोत्तम,
मिले भरत से राम क्षितिज में सिंधु-गगन-सम !
"उठ, भाई, तुल सका न तुझसे, राम खड़ा है,
तेरा पलड़ा बड़ा, भूमि पर आज पड़ा है !

गए चतुर्दश वर्ष, थका मैं नहीं भ्रमण में,
विचरा गिरि-वन-सिंधु-पार लंका के रण में ।
श्रांत आज एकांत-रूप-सा पाकर तुझको,
उठ, भाई, उठ, भेंट, अंक में भर ले मुझको !
मैं वन जाकर हँसा, किंतु घर आकर रोया,
खोकर रोए सभी भरत, मैं पाकर रोया !
"आर्य, यही अभिषेक तुम्हारे भृत्य भरत का,
अंतर्बाह्य अशेष आज कृतकृत्य भरत का ।"
पूरी भी थीं युगल मूर्तियाँ अब तक ऊनी,
मिल होकर भी एक, हर्षमय थीं अब दूनी ।
हिल-हिलकर मिल गईं परस्पर लिपट जटाएँ,
मुख-चंद्रों पर झूम रही थीं घूम घटाएँ ।

(क) इन पंक्तियों में किस समय का वर्णन है ?

(ख) अयोध्या में राम, सीता और लक्ष्मण का स्वागत किसने किया ?

(ग) राम और भरत के मिलन को 'सिंधु-गगन-सम' क्यों कहा ?

(घ) राम ने क्यों कहा - "मैं वन जाकर हँसा, किंतु घर आकर रोया ।"

(ङ) 'युगल मूर्ति' किसे कहा है ?

(च) राम और भरत की जटाओं के वर्णन में कवि ने क्या कहा है ?

(छ) 'लक्ष्मणाग्रज' में समास बताइए ।

(ज) काव्यांश का कोई उपयुक्त शीर्षक दीजिए ।